एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 04 (सितम्बर-अक्टूबर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कम पानी वाले क्षेत्रों में सरसों की वैज्ञानिक खेती

(*गिरधारी लाल यादव[1], ओम प्रकाश यादव[2] एवं कन्हैया लाल यादव[1])
[1]श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविधालय, जोबनेर, जयपुर (राजस्थान)
[2]चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविधालय, हिसार (हरियाणा)
* giradharilalyadav2014@gmail.com

सरसों, भारत की रबी में ली जाने वाली प्रमुख तिलहनी फसल है। यह फसल कम लागत और कम सिंचाई सुविधा में भी अन्य फसलों की तुलना में अधिक लाभ देती है। सरसों के बीजो में 33-39 प्रतिशत तेल निकलता है। जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार के पोष्टिक आहार बनाने में, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द के लिए किया जाता है। इस प्रकार सरसों की लगातार मांग बढ़ रही है। इसलिए किसान भाई निम्न बातों का ध्यान रख कर कम पानी वाले क्षेत्रों में भी सरसों की खेती कर सकते है।

मृदा की जाँच

सरसों की खेती करने से पहले खेत की मृदा की जाँच करा लेनी चाहिए। जिससे पता चल सकें कि मृदा में कौन-कौनसे पोषक तत्वों की कमी है। इससे उन पोषक तत्वों को मृदा में मिलाकर उसकी उर्वरा शक्ति को बढ़ाया जा सकें।

मृदा एवं मृदा तैयारी

सरसों की अच्छी पैदावार के लिए समतल एवं अच्छे जल निकास वाली बलुई-दोमट से चिकनी दोमट मृदा उपयुक्त रहती है। बुआई के पूर्व खेत की 4-5 बार अच्छी तरह जुताई कर मृदा को भुरभुरा बना लें। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा लगाना चाहिए जिससे कि मृदा नमी का संरक्षण हो सकें।

जलवायु

सरसों कि फसल के लिए शुष्क एवं ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है। जिन क्षेत्रों में कोहरा एवं ठंड अधिक पड़ती है। वहां फसल को नुकसान ज्यादा होता है। इसका अधिकतम उत्पादन लेने के लिए 26-28 सेल्सियस तापमान उपयुक्त रहता है।

बुआई का समय एवं बीजदर

सरसों की फसल की बुआई का उपयुक्त समय सितम्बर के अंतिम सप्ताह से लेकर नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक रहता है। सरसों का बीज राज्य के बीज भंडार गृह अथवा सरकारी मान्यता प्राप्त संस्थान से ही खरीदें। सरसों की फसल की बुआई के लिए 5-6 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए।

बीजोपचार

सरसों की फसल को बीज जनित रोगो से बचाने के लिए थीरम 2.5 ग्राम/कि.ग्रा. या कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। श्वेत किट्ट एवं मृदोमिल आसिता से बचाव हेतु मेटालेक्जिल(एप्रोन एस डी-35)1.5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज में मिलाकर उपचारित कर बुआई करें।

बुआई की विधि

सरसों की बुआई देशी हल या सीड ड्रिल से कतारों में करें। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30-45 से.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 से.मी. एवं बीज की गहराई 2-3 से.मी. रखें।

उन्नत किस्में

सरसों की विभिन्न उन्नत किस्में सारणी 1 में दी गयी है।

सारणी1: सरसों की विभिन्न उन्नत किस्में

क्र.स.	किस्म	पकने की अवधि (दिनों में)	उपज (क्विंटल/हैक्टर)
1.	रोहिणी	125-130	13-18
2.	आशीर्वाद	125-130	15
3.	वरुणा(टी-59)	125-140	15-18
4.	पूसा बोल्ड	125-135	15-22
5.	पूसा जय किसान	125-135	20-25
6.	क्रांति	125-135	20-25
7.	आर.एच.-0749	140-145	20-25
8.	जी.एस.एल.-1	150-160	15-17
9.	आर.जी.एन.-13	135-160	18-23
10.	एन.आर.सी.डी.आर.-02	130-150	19.5-26.5
11.	जवाहर सरसों-2	112-115	24
12.	आर.जी.एन.-73	127-136	17-22
13.	आर.एल.-1359	140-145	19-27
14.	आर.जी.एन.-48	130-135	18-20
15.	एन.आर.सी.एस.बी.-101	105-135	13-14

खाद एवं उर्वरक

सरसों की खेती के लिए 8-10 टन/हैक्टर गोबर की सड़ी हुई खाद बुआई से एक माह पूर्व खेत में मिलायें तथा रासायनिक उर्वरक का प्रयोग किसान भाई सिफ़ारिश कि गई मात्रा के अनुसार ही करें। सरसों में नाइट्रोजन 80 किलोग्राम, फास्फोरस 40-60 किलोग्राम, पोटाश 20-40 किलोग्राम तथा सल्फर 40 किलोग्राम प्रति हैक्टर प्रयोग करे। नाइट्रोजन की आधी मात्रा, फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुआई से पहले, अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देनी चाहिए। शेष आधी नाइट्रोजन की मात्रा बुआई के 25-30 दिन बाद टॉपड्रेसिंग (उर्वरको को छिड़काव विधि से देना) रूप में प्रयोग करें।

सिंचाई

सरसों की पहली सिंचाई फूल आने से पूर्व 30-35 दिनों पर और दूसरी सिंचाई जब फली में दाना भरने लगे, तब करनी चाहिए जिससे किसानो को अधिक मुनाफा मिल सकता है।

खरपतवार नियंत्रण

सरसों के खेत में बुआई के 15-20 दिन बाद निराई-गुड़ाई करके खरपतवारो को निकालना चाहिए। रसायन विधि से खरपतवार नियंत्रण के लिए बेसालीन 1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व/ हैक्टर बुआई से पूर्व खेत में मिलाये तथा पेंडीमेथिलीन की 1 कि.ग्रा. मात्रा बुआई के तुरंत बाद एवं अंकुरण से पूर्व खेत में मिलाये।

सरसों के प्रमुख कीट

1. चेपा/माहूं/एफीड

यह सरसों का प्रमुख हानिकारक कीट है। इसके नियंत्रण के लिए डायमेथोएट 30 ई.सी. (1 लीटर/हैक्टर) अथवा इमिडाक्लोरोपिड 17.8 एस.एल. (125 मि.ली./ हैक्टर) दवा को 600-800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

2. आरा मक्खी

यह मक्खी सरसों की फसल को अक्टूबर से दिसम्बर तक नुकसान पहुँचाती है। इसके नियंत्रण के लिए डायमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर/हैक्टर दवा को 500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

सरसों के प्रमुख रोग

1. सफेद रोली

इस रोग में पौधो की पत्तियों की निचली सतह पर उभरे हुए चमकीले सफेद गोलाकार छोटे –छोटे फफोले दिखाई देते है। इसके नियंत्रण के लिए 2 ग्राम मैन्कोजैब या 6 ग्राम एप्रोन एस.डी.35 दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचारित करें। तथा 2 ग्राम मैन्कोजैब दवा का घोल प्रति लीटर पानी में मिलाकर 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

2. झुलसा रोग

इस रोग में पत्तियाँ एवं फलियों पर गहरे कत्थई रंग के धब्बे दिखाई देते है। इसके उपचार के लिए फसल बोने के 50 दिनों बाद रिडोमिल(0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

3. तना गलन

इस रोग से सरसों के तनों पर भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते है। एवं ग्रसित पौधे अंदर से खोखले पोले हो जाते है। इसके नियंत्रण के लिए बीज को बाविस्टीन से 3 ग्राम/ किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर बुआई करें।

फसल की कटाई और भंडारण

सरसों की फसल एवं फलिया जब पीली रंग की हो जाए, तब फसल की कटाई करें। और सुखाकर मड़ाई करके बीज अलग कर लेना चाहिए। सरसों के बीज को अच्छी तरह सुखाकर ही 8-9 प्रतिशत नमी पर ही भंडारण करना चाहिए।

Figure 1: सरसों की तैयार होती फसल

उपज

असिंचित क्षेत्रों में इसकी पैदावार 20-25 क्विंटल तथा सिंचित क्षेत्रों में 25-30 क्विंटल प्रति हैक्टर तक प्राप्त होती है।

Figure 2: सरसों का बीज

AGRI ARTICLES
Publishing Skills...
Estd. 2021